Publication	Women Express
Date	23rd September, 2015
Page No.	01
Edition	New Delhi

देश के दूसरे 'मांझी' को खोजने की नई पहल

जमीनी स्तर की प्रतिभाओं को सम्मानित करेगी जेएसपीएल फाउंडेशन

(सीमा श्रीवास्तव)

नई दिल्ली। माउंटेन मैन' के नाम से मशहूर दशरथ मांझी बिहार के गया के रहने वाले थे, जिन्होंने छेनीहथौड़ा लेकर 22 सालों की कड़ी कोशिशों के बाद एक पहाड़ काट कर रास्ता बना दिया। आज दशरथ मांझी हमारे बीच नहीं है, लेकिन उनकी कहानी जिंदा है। दुःसाहस और दृढ़ संकल्प का यह एक मशहूर उदाहरण है।

हालांकि देश में अब भी कई दशरथ मांझी हैं, जिन्होंने अपने गांवों शहरों में अपनी एक पहचान कायम की है। लेकिन, उनकी कहानियों से दुनिया अनजान है। उन्हें और उनकी कहानियों को प्रकाश में लाने के लिए जेएसपीएल फाउंडेशन आगे आया है। ऐसे अदम्य साहसी लोगों को अब फाउंडेशन सम्मानित करेगा। इसके लिए जेएसपीएल फाउंडेशन ने आज एक अभूतपूर्व पुरस्कार राष्ट्रीय स्वयंसिद्ध सम्मान को लांच किया। जेएसपीएल फाउंडेशन की अध्यक्ष शालू जिंदल के मुताबिक राष्ट्रीय स्वयंसिद्ध सम्मान जमीनी स्तर के उन लोगों को सम्मानित करेगा, जिन्होंने अपने अनुकरणीय साहस, प्रतिबद्धता और आत्म विश्वास के बल पर जीवन की विपरीत परिस्थितियों को पार किया और अपनी खुद की विशिष्ट पहचान बनाई। साथ ही वे बहुत से लोगों की प्रेरणा बने। ये लोग 'परिवर्तन के दूत' बन कर देश के विभिन्न हिस्सों में जाकर बच्चियों के उत्थान के लिए काम करेंगे तथा अपने अनुभवों व कठिनाईयों के उदाहरणों से उन्हें अपने सपने सच करने के लिए प्रेरित करेंगे। शालू जिंदल के मुताबिक राष्ट्रीय स्वयंसिद्ध सम्मान के आयोजन का उद्देश्य है

जमीनी स्तर पर प्रतिभाओं की पहचान करना व उन्हें बढ़ावा देना। हमारा प्रयास है उन कहानियों को सामने लेकर आना जो अभी तक अनसुनी रही हैं। साहस और संकल्प की ये कहानियां समाज में परिवर्तन ले कर आएंगी। पत्रकारों से बातचीत करते हुए जिंदल ने कहा कि राष्ट्रीय स्वयंसिद्ध सम्मान ऐसे ही लोगों को सलाम करने और उन्हें एक राष्ट्रीय मंच मुहैया कराने की कोशिश है ताकि बाकी लोग भी उनसे प्रेरणा ले सकें। स्वयंसिद्ध सम्मान को राष्ट्रीय स्तर पर ले जा कर जेएसपीएल फाउंडेशन की कोशिश है एक देशव्यापी प्रेरित मानव श्रृंखला बनाना। ये पुरस्कार 10 श्रेणियों में दिए जाएंगे। महिला सशक्तिकरण, उद्यमिता (स्टार्टअप), शिक्षा, कृषि, ग्रामीण विकास, जन सेवासमाज सेवा, कला व शिल्प (प्राचीन विरासत, ग्रामीण शिल्प), आजीविका,व्यावसायिक कौशल, स्वास्थ्य, आविष्कार, तकनीलॉजी (विज्ञान से संबंधित) तथा पर्यावरण। शालू जिंदल के मुताबिक 10 पुरस्कार व्यक्तियों को दिए जाएंगे तथा 10 पुरस्कार संगठनों को दिए जाएंगे। प्रत्येक विजेता को एक प्रमाणपत्र तथा 1 लाख का नकद पुरस्कार प्रदान किया जाएगा।

आज से स्वीकार होगा आवेदन, 14 जनवरी को मिलेगा पुरस्कार

प्रविष्टियों को आज से स्वीकार किया जा रहा है और अंतिम तारीख 25 अक्टूबर है। चारों क्षेत्रीय निर्णायक मंडल इस साल नवंबर के पहले सप्ताह में कोलकाता, बैंगलुरु, मुंबई और दिल्ली में बैठक करेंगे तथा अपनेअपने क्षेत्र से प्रत्येक श्रेणी के लिए 23 नाम शॉर्टलिस्ट करेंगे। तत्पश्चात् शॉर्टलिस्ट की गई प्रविष्टियों को नवंबर के अंत में प्रतिष्ठित राष्ट्रीय ज्यूरी के समक्ष रखा जाएगा जहां अंतिम विजेताओं को चुना जाएगा। राष्ट्रीय ज्यूरी में समाज के विभिन्न वर्गों की प्रतिष्ठित हस्तियां शामिल होंगी जो अपनेअपने क्षेत्र में महान उपलब्धियां हासिल कर चुके हैं। पुरस्कार समारोह 14 जनवरी को नई दिल्ली के कमानी ऑडिटोरियम में होगा।

जमीनी स्तर के अग्रदूतों को पहचानेंगे : पांडे

पुरस्कार प्रक्रिया के बारे में युनाइटेड नेशंस ग्लोबल कॉम्पैक्ट नैटवर्क इंडिया के कार्यकारी निदेशक पूर्ण चंद्र पांडे ने कहा कि चिन्हित क्षेत्रों में जमीनी स्तर के अग्रदूतों को पहचानने और सम्मानित करने की प्रक्रिया 360 डिग्री, मजबूत, बहुस्तरीय और निष्पक्ष होगी। चार क्षेत्रीय व एक राष्ट्रीय ज्यूरी की सुगठित मूल्यांकन व्यवस्था के द्वारा किसी भी उम्मीदवार के प्रति किसी भी प्रकार के पक्षपात की संभावना को खत्म कर दिया जाएगा। राष्ट्रीय स्वयंसिद्ध सम्मान सौहार्दपूर्ण तरीके से युनाइटेड नेशंस ग्लोबल कॉम्पैक्ट के ध्येय के साथ मिलकर अग्रदूतों और उनके अभिनव विचारों की पहचान करता है जो 10 सार्वभौमिक सिद्धांतों तथा संयुक्त राष्ट्र के व्यापक लक्ष्यों पर आधारित हों।